Krishna Nand(i) B.A I Hon's (1)

Question: → Trace the history of Abnormal Psychology. OR

Trace out the main ideas regarding abnormality Prevalent during the ancient times.

OR

Describe the contributions of "Kraplin" "Mesmers", "Paul Janet", "Freud" and "Charcot" to the development of abnormal Psychology.

Answer: → असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास देखने से हमें इस बात की जानकारी होती है कि असामान्यता का अर्थ भिन्न-२ कालों में भिन्न ढंग से लगाया जाता था। वर्तमान समय में असामान्यता की जो धारणा है वह विभिन्न धारणाओं के पारस्परिक संघर्षों की उपज है। इसका श्रीगणेश जादू-टोना, धर्म से ~~लेकर विज्ञान तक~~ और अन्त विज्ञान से हुआ है। इसी सन्दर्भ में "J.e. Frazer" ने कहा है, "The movement of higher thought has been from magic through religion to science"

कहने का अर्थ है कि उच्च विचारों के इतिहास का प्रारम्भ जादू-टोने से प्रारम्भ होकर, धर्म तक पहुँचते हुए ही विज्ञान तक पहुँचा है। असामान्य मनोविज्ञान के विकास का इतिहास की व्याख्या निम्न ढंग से किया विभिन्न कालों, युगों के अन्तर्गत किया जा रहा है →

(i) प्राथमिक युग। (The primitive era)

असामान्य व्यवहार की व्याख्या का प्रारम्भिक काल अन्धविश्वास से भरा था। इस युग के आदि के विचारक अंधविश्वास का युग से सम्बोधित करते थे

Krishna Nand B.A I Hons (2)

"Kisker, M.W." ने अपनी पुस्तक "Ibid" के Page 36 में प्राथमिक युग की असामान्यता सम्बन्धी धारणाओं की व्याख्या करते हुए कहा है कि मानसिक अस्वस्थता के प्रति प्रारंभिक विचार इस विश्वास पर आधारित था संपूर्ण संसार शक्तियों भगवानों या अलौकिक शक्तियों से संचालित होता है। "Kisker" ने भी इस युग की मान्यताओं के सन्दर्भ में कहा है कि अगर सामान्य व्यवहार दैवी शक्ति के माध्यम से होता है तो असामान्य व्यवहार का कारण बुरी या प्रेत शक्ति है। इस तरह असामान्यता की व्याख्या इस काल में दैवी और प्रेत शक्ति के आधार पर की गई है। "K. Stephen" ने कहा है कि प्राथमिक युग के लोग समझते थे कि सभी वस्तुओं पर दो तरह की शक्तियों का शासन था। इन शक्तियों को प्रेत शक्ति (Evil Spirit) तथा दैवी शक्ति (Good Spirit) कहा जाता था। सभी अच्छे एवं सामान्य व्यवहारों की व्याख्या दैवी शक्ति के आधार पर की जाती थी तथा बुरे एवं अलौकिक व्यवहार या असामान्य व्यवहार की व्याख्या प्रेत शक्ति के आधार पर की जाती थी। इस तरह प्राथमिक युग के लोग असामान्यता का कारण प्रेत शक्ति की कृपा समझते थे। कहने का तात्पर्य है कि प्रेत शक्ति व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर जाने से वह असामान्य व्यवहार प्रदर्शित करने लगता था। तथा उपचार के लिए जादू-टोना, झाड़-फूंक या मार-पीट का प्रयोग लोग करते थे। लेकिन "Empedocles" and "Hippocrates" के आगमन से इन यूनानी विचारकों के देनों पर पानी फिर गया। इन्होंने असामान्यता का कारण प्रेत शक्ति को नहीं माना बल्कि मस्तिष्क में उत्पन्न विकार को असामान्यता का आधार माना। Hippocrates (400 B.C.) के असामान्यता सम्बन्धी विचार से ही आधुनिक मत की बुनियाद पड़ी। इन्होंने कहा कि मस्तिष्क चेतना का केन्द्र है तथा मानसिक ~~अस्वस्थता~~ असामान्यता मस्तिष्क विकार के कारण होती है। इसके साथ-ही-साथ

Hippocrates के विचार से वैज्ञानिकता की नींव पड़ी लेकिन यह भी अंधविश्वास से घेरे से बंध गया। क्योंकि ईसाई धर्म के आने से लोगों में यह अंधविश्वास होने लगा कि संसार के सभी कार्यों पर दो प्रकार की शक्तियाँ ईश्वरीय शक्ति व पैशाचिक शक्ति नियंत्रण करती हैं। उस समय लोग यह मानते थे कि प्राणी सामान्य व्यवहार तभी प्रदर्शित करता है ~~[illegible]~~ जब कि उससे ईश्वर खुश रहते थे। पैशाचिक शक्ति के कारण असामान्य व्यवहार होता था। असामान्यता का निदान का एकमात्र उपाय पादरियों को खुश करना था।

प्राथमिक युग के कारणाओं पर ध्यान देने से यह स्पष्ट होता है कि इस युग पूर्णतः अंधविश्वास का काल था।

(2) "मध्य युग" "The middle Era"

असामान्यता की व्याख्या मध्यकाल में भी प्राथमिक काल की भाँति की गई। इस काल में सामान्य लोगों की धारणा थी कि मानसिक व्याधि भूत-प्रेत या दुष्टात्मा का परिणाम है। इसलिए इस काल को 'अन्धकार युग' (Dark age) भी कहा जाता है लेकिन कुछ दार्शनिक एवं चिकित्सक के आगमनों से असामान्यता की व्याख्या को नई दिशा मिली। "Weyer" 1514-1587 तथा "Plater" 1566-1614 ने प्रारंभिक मत का खुलकर विरोध किया लेकिन इस काल में धार्मिक अंधविश्वास ही ~~[illegible]~~ व्याप्त रहा। "Paracelsus" 1493-1541 ने भी धार्मिक मान्यताओं का जमकर विरोध किया। मध्यकाल के 10 वीं शताब्दि से 15 वीं शताब्दि तक एक विशेष प्रकार का पागलपन की रूप रेखा देखने को मिला जिसे सामूहिक पागलपन कहा गया। यह जर्मनी से लेकर इटली, हालैण्ड तक फैल गया। लेकिन सामान्य जन इसका कारण मात्र भूत-प्रेत या जादू-टोना का ही प्रभाव को माना। अन्ततः हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि मध्यकाल का प्रारम्भ पूर्णतः अंधविश्वास एवं अंधकार से ही परिपूर्ण था।

Krishna Nand (B.A) I. Hon's (4)

"Philippe Pinel" (1445-1826) के आगमन से प्रति असामान्यता की व्याख्याओं का रूप परिवर्तित हो गया। इन्होंने प्राचीन मतों का तीव्र विरोध किया और मानसिक व्याधि की व्याख्या मानसिक विकार के आधार पर की। उन्होंने चिकित्सा के अमानवीय उपचार का भी तीव्र विरोध किया और कहा कि रोगी को जंजीर में बंद कर उसे मार पीट कर उसे रोग से मुक्त नहीं कराया जा सकता है। इस कार्य के लिए उन्होंने फ्रांस में एक चिकित्सालय की भी व्यवस्था की। इस तरह हम कह सकते हैं कि 'फिलिप पाईनेल' के कार्यों ने वैज्ञानिकता की बुनियाद रखी। फलतः अब लोगों में इस मत का संचार होने लगा कि असामान्यता मानसिक विकारों का ~~कारण है~~ परिणाम है न कि पापों की उपज। "Esquirol" 1772-1840 ने अपनी पुस्तक "मानसोपचार शास्त्र" में Philippe Pinel के कार्यों का प्रसार किया। 19 वीं शताब्दि के प्रारम्भ काल में "Pinel" एवम् "Esquirol" के मानवतावादी विचार से प्रभावित होकर इंग्लैण्ड में "Quaker" तथा "William Tuke" तथा अमेरिका में Benjamin Rush (1745-1813) तथा Dorothea Dix 1802-1887 ने इस दृष्टिकोण को प्रसारित किया। "William Tuke" ने इंग्लैण्ड में York Retreat नाम से एक चिकित्सालय की स्थापना की और रोगी का उपचार मानवतावादी दृष्टिकोण से करने लगा। इस कार्य में उन्हें काफी सफलता हासिल हुई। "William Griesinger" (1909) ने एक चिकित्सालय की स्थापना भी की।

इस तरह मध्य काल के असामान्यता सम्बन्धी विचार को देखने से यह स्पष्ट होता है कि मध्यकाल का प्रारम्भ अन्धकार एवम् अंधविश्वास से जुड़ा था लेकिन इसका उत्तरार्द्ध ने ही वैज्ञानिकता को लेकर फैलाया।

Krishna Na(वि) B.A I (5)

मनोजात-युग (Psychogenic-age) :→

मनोजात युग का विकास मनोदैहिक युग
की मान्यताओं के प्रतिरोध में हुआ है। इस युग की मान्यता इस
परिकल्पना पर आच्छादित है कि स्नायु में गड़बड़ी ही नहीं केवल
असामान्यता का कारण है क्योंकि अन्य मनोवैज्ञानिक कारणों से जिसे
मान्य व्यवहार उत्पन्न होते हैं। इस दृष्टिकोण के विकास में सम्मोहन
एवम् हिस्टीरिया (Hypnosis and Hysteria) की खोज ने काफी मदद
की। असामान्यता के कारणों एवम् उपचार के प्रविधियों के सन्दर्भ में विभिन्न
मनोवैज्ञानिकों ने काफी योगदान दिया है जिनका वर्णन निम्नांकित है :→

"Mesmer" (1734 - 1814) ने मानसिक रोगों
का कारण मनोवैज्ञानिक माना तथा उपचार के लिए सम्मोहन प्रविधि
का प्रयोग किया। इन्होंने Vienna में इस कार्य के लिए एक चिकित्सा
लयों की स्थापना की और Hypnosis के माध्यम से चिकित्सा
की प्रक्रिया शुरू की। इनका मत था कि सम्मोहन उस गहन निर्देशन
शीलता की अवस्था को कहते हैं, जिसमें सम्मोहित व्यक्ति ऐसी मोह
निद्रा की अवस्था में आ जाता है जहाँ कि उसे तात्कालिक चेतनता
का ज्ञान नहीं होता है। "Prof J.F. Brow" "Ibid" P. 36 ने
भी कहा है कि सम्मोहन में प्राणी की चेतना केवल सम्मोहक के
निर्देशानुसार ही कार्य करती है। जब वह व्यक्ति सम्मोहन की
अवस्था से वापस आता है तब उसे सम्मोहनावस्था में दिये
गये निर्देश या सुझाव स्मरण नहीं रहते। इस तरह से सामी
देखा गया है सम्मोहन की अवस्था में प्राणी कुछ ऐसी भी
अनुभूतियों को व्यक्त करता है जिसका ज्ञान उसे चेतन अवस्था
में नहीं रहता है। "Mesmer" को वैज्ञानिक युग का जनक माना
जाता है। इन्होंने सम्मोहन पर Vienna में काफी अध्ययन
किया और 1778 ई० में एक चिकित्सा केन्द्र की स्थापना की
तथा मरीजों का ईलाज प्रारंभ किया। इन्होंने यह निष्कर्ष निकाला
कि प्रत्येक व्यक्ति में एक चुम्बकीय शक्ति होती है जिसका अन्तरगत

Krishna Nand (BA) I Hon's (6)

(3) दैहिक युग (The Somatogenic Era) : →

दैहिक युग के आगमन से प्रति असामान्यता की व्याख्या एवं उपचार के तरिकों में एक नई विचार का पदार्पण हुआ। इस काल के विचारों ने पौराणिक सभी मान्यताओं में परिवर्तन लाया और इस मान्यता की स्थापना ~~हुई~~ किया कि मानसिक रोग उतना ही वास्तविक एवम निश्चित है जितना शारीरिक रोग। Benjamin Rush (1812) ने मानसिक चिकित्सा पर एक निबंध प्रस्तुत किया। इसी आलोक में "William Griesinger" (1817 - 1868, 1840-1902) ने "Pathology and Therapy of Psychic Disorders" नामक पुस्तक का प्रकाशन किया। इस पुस्तक में इन्होंने इस बात पर बल दिया कि मस्तिष्क में जब किसी प्रकार का विकार उत्पन्न हो जाता है या कोई स्नायु क्षतिग्रस्त हो जाती है तो उस व्यक्ति में मानसिक व्याधि उत्पन्न होने लगती है और उसका व्यवहार अलौकिक या असामान्य हो जाता है। ~~Kraeplin के इस परिकल्पना के आधार पर~~ William Griesinger के इस परिकल्पना के आधार पर "~~Krap~~ Kraepelin" (1883) ने एक पुस्तक का प्रकाशन किया जिसमें मानसिक बीमारी का मूल कारण मानसिक विकृति माना तथा रोग के विभिन्न लक्षणों के आधार पर मानसिक रोग को भी वर्गीकृत किया। इस तरह इस काल में मानसिक रोगों को उतना ही महत्वं समझा जाने लगा जितना शारीरिक रोग को। मानसिक रोग का उपचार इस काल में दैहिक आधार पर हो जाने लगी जिसके कारण रोगी के निदान में सफलता नहीं मिली। बाद में विभिन्न अनुसंधानों के आधार पर लोगों ने मत स्पष्ट किया कि स्नायु में गड़बड़ी ही मात्र मानसिक विकृति का कारण नहीं बल्कि अन्य वैज्ञानिक कारण भी है तथा दैहिक आधार पर की चिकित्सा से निदान नहीं हो सकता है।

दैहिक युग में वर्णित असामान्यता सम्बन्धी योगदानों से यह स्पष्ट होता है कि इस काल में असामान्यता का वैज्ञानिक विचार प्रस्तुत हुआ लेकिन उपचार के सही प्रविधि के अभाव में इसका क्षेत्र सीमित रह गया।

Krishna Nand (Psy.) A I Hons (7)

ठीक ढंग से उपयोग करें तो उससे दूसरे व्यक्ति प्रभावित हो सकते हैं। इसी परिकल्पना पर Mesmer ने मानसिक रोगियों की चिकित्सा शुरू की। इन्होंने रोगी को अंधेरे कमरे में लाया। कमरे में एक टब था जिसमें कुछ रासायनिक द्रव्यों के योग से कुछ तरल द्रव रखा था जिसमें से एक लोहे की छड़ निकली रहती थी। यह छड़ चुम्बकीय शक्ति से युक्त होता था जिसे व्यक्ति के शरीर के रुग्ण भाग से स्पर्श करने पर वह भाग ठीक हो जाता था। इस तरह Mesmer ने पाया कि इस प्रविधि से Hysteria के रोगी चंगे हो जाते थे। इसी के आधार पर सम्मोहन का विकास हुआ। प्रारम्भ में Mesmer के इस कार्य का घोर विरोध हुआ लेकिन बाद में इसको आधिकारिक क्षेत्र में समर्थन मिला। इस तरह Mesmer ने मानसिक व्याधि का कारण मनोजात माना तथा Hypnosis को चिकित्सा के प्रविधि के रूप में प्रयोग में लाया।

"James Braid" (1795-1860) मेस्मर के कार्यों को विकसित करने में का योगदान कम सराहनीय नहीं है। इन्होंने मेस्मर के प्रविधि को सम्मोहन के नाम से सम्बोधित किया और इन्होंने यह महसूस किया कि सम्मोहन एक ऐसी अवस्था है जो बिना मंत्र, उपकरण या चुम्बक के भी उत्पन्न की जा सकती है। इस तरह उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में यह एक लोकप्रिय होगया तथा बाद में चिकित्सा का यही प्रविधि कायम रहा। "Charcot" ने अपने अध्ययन से Neurology में प्रख्याति प्राप्त की जिसके कारण इनको पेरिस के एक चिकित्सा केन्द्र का प्रधान बनाया गया। प्रारम्भ में इन्होंने Mesmer के विचारों को खण्डन किया लेकिन बाद में उनके विचारों के समर्थक बन गये। शार्को ने मानसिक विकृतियों का कारण मनोजात बताया और सम्मोहन के माध्यम से इसका निदान करना शुरू किया। इन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि Hysteria स्त्रियों के अलावा पुरुषों में भी पाया जाता है। इन्होंने Hysteria के सन्दर्भ में यह

Krishna Nand B.A. Hon's (9)

जमा हो जाते हैं तथा सामूहिक अचेतन में वंशानुक्रम की प्रक्रिया से पूर्वजों की स्मृतियाँ परम्परागत प्रक्रियाओं के रूप में जमा होती हैं। इन दोनों का प्रभाव प्राणी के व्यवहार पर अधिक पड़ता है। इन्होंने असामान्यता का कारण व्यक्ति की इच्छा का असंतुष्ट होना एवम् वैयक्तिक तथा सामूहिक अचेतन के बीच संबंध का टूटना माना है।

फ्रायड के दूसरे शिष्य Adler ने भी फ्रायड के मत के विरोध में अपना विचार प्रस्तुत किया। Adler ने हीनता की भावना को असामान्यता का मूल कारण माना है तथा व्यक्ति के सभी प्रकार के व्यवहारों को हीनता की भावना पर विजय पाने के लिए उच्चता की भावना से प्रेरित बताया है।

मनोजात युग के ~~संदर्भ में~~ विकास के संदर्भ में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपना योगदान दिया है। इन सबों में मनोविश्लेषण के प्रवर्तक Sigmund Freud का योगदान काफी वैज्ञानिक एवम् लोकप्रिय रहा।

5 मनोदैहिक युग (The Psychosomatic Era)

मनोदैहिक युग का विकास दैहिक युग एवम् मनोजात युग के मान्यताओं के सम्मिलित रूप से हुआ है। इस युग के मनोवैज्ञानिक ने इस बात से सहमत है कि शारीरिक और मानसिक रोग एक दूसरे से अन्तर संबंधित है। कहने का तात्पर्य है कि शारीरिक रोगों का कारण न केवल शारीरिक होता है बल्कि इसका कारण मानसिक भी होता है और मानसिक रोग शारीरिक कारणों से भी प्रभावित होता है। इस मान्यता से दैहिक युग और मनोजात युग के विचारों का संघर्ष समाप्त हो गया। तभी तो ~~डॉक्टर~~ "Doctor Karl Menninger" ने अपनी पुस्तक Psychiatry and Medicine में मनोदैहिक युग की मान्यताओं को स्वीकार करते हुए कहा है कि प्रत्येक विचारवान चिकित्सक जानता है कि मनोवैज्ञानिक तत्व उतने ही वास्तविक एवं प्रभावशील हैं जितने भौतिक एवं रासायनिक तत्व।